बेहतर शिक्षा को दिशा दे सकती है वार्ड सभा

वार्ड सभा कर के शिक्षा की गुणवत्ता पर चर्चा करते ग्रामीण और शिक्षक. (फाइल फोटो)

प्रेरणा डेवलपमेंट फाउंडेशन के वार्ड सभा सशक्तिकरण दल ने कई वार्ड सभाओं में ग्रामीणों और शिक्षकों की बैठक का लिया जायजा

प्रणव कुमार चौधरी

गांव की सभा एवं समिति जैसे वार्ड सभा, ग्रामसभा, विद्यालय शिक्षा समिति या अभिभावक बैठक विद्यालय से अपने बच्चों के लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्राप्त करा पाने में सक्षम है या नहीं - इसी संदर्भ में हाल के दिनों में वार्ड सभा सशक्तिकरण दल को कुछ परिवेश एवं एक छोटी चर्चा में शामिल होने का मौका मिला.

वार्ड सभा सशक्तिकरण दल गांव में अवस्थित एक विद्यालय परिसर में एक शिक्षक एवं दो ग्रामीणों के साथ चर्चा कर रही थी. इस विद्यालय की स्थापना सन 1930 में हुई थी. चर्चा में शामिल एक ग्रामीण खुद इस विद्यालय से शिक्षा लिये थे, उनके दादा जी और पिता जी इसी विद्यालय से पढ़ाई किये थे और अब उनका बच्चा भी इसी विद्यालय में नामांकित है. चर्चा का विषय था कि क्या माता-पिता विद्यालय में साप्ताहिक अभिभावक बैठक में हिस्सा लेते हैं? यदि हिस्सा लेते हैं, तो वे किस बिंदु पर चर्चा करते हैं और अपनी अपेक्षाओं को पूरा करने के लिए विद्यालय से क्या करते हैं? दोनों ग्रामीणों का यही विचार था कि 'शिक्षक ही न बतायेंगे कि ग्रामीणों को बैठक में क्या करना है.' पहले ग्रामीण ने चर्चा के दौरान बताया कि वे अपने बच्चे की कॉपी कभी नहीं देखते और कभी भी शिक्षक से अपने बच्चे की शिक्षा की स्थिति के बारे में चर्चा नहीं करते.

चर्चा में शामिल शिक्षक का बच्चा निजी विद्यालय में पढ़ता है. शिक्षक ने बताया कि वे अपने बच्चे की कॉपी और स्कूल डायरी प्रतिदिन देखते हैं, नियमित रूप से डायरी पर हस्ताक्षर करते हैं और अपना विचार या विद्यालय से अपनी अपेक्षा डायरी में लिखित रूप में देते हैं . वे स्वयं या उनकी पत्नी बच्चे के विद्यालय की अभिभावक बैठक में नियमति रूप से हिस्सा लेते रहे हैं. इस चर्चा में शामिल दूसरे ग्रामीण की उम्र 75 वर्ष है और उनका कोई बच्चा नहीं है. उनका कहना था उनका कोई बच्चा विद्यालय में पढ़ता नहीं है, तो विद्यालय शिक्षा समिति या अभिभावक बैठक से उनका क्या लेना देना है और शिक्षक से वे क्या और क्यों बोलेंगे. जब उनसे पूछा गया कि उनके भाई के बच्चे या पोते या कोई अन्य नजदीकी रिश्तेदार तो पढ़ते ही होंगे, इस पर उन्होंने कहा कि विद्यालय में क्या पढ़ाई होती है, इस पर मन में कभी कोई विचार आया ही नहीं.

आगे जब शिक्षक से पूछा गया कि 'सरकारी विद्यालय में अभिभावक बैठक में चर्चा का मुद्दा क्या होता है?' शिक्षक ने कहा- वही सब! सभी माता-पिता अपने बच्चे को विद्यालय समय पर भेजें, अपने बच्चे की शिक्षा पर ध्यान दें, अपने बच्चों को अच्छी-से-अच्छी शिक्षा दें वगैरह. किसी खास अभिभावक से उनके बच्चे की शिक्षा संबंधित प्रगति या समस्या पर चर्चा नहीं होती है.

केस स्टडी-दो

इसी संदर्भ में एक अन्य गांव की एक वार्ड सभा का परिदृश्य प्रस्तुत करना उचित होगा. एक विद्यालय परिसर में आयोजित इस सभा में गांव के निवासी सार्वजनिक मुद्दे पर चर्चा कर रहे हैं. चर्चा में कुल 35 महिलाएं एवं पुरुष सम्मिलित हैं .

चर्चा में एक मुद्दा आया कि मध्याह्न भोजन और बच्चों की शिक्षा. इस मुद्दे को लिखा गया. चर्चा में बात सामने आयी कि हमलोग क्या करें. वार्ड सभा के निवेदन से पोषक क्षेत्र के विद्यालय के शिक्षक उनके सवालों का जवाब देने के लिए सभा में आये. उक्त मुद्दा लिखित होने के कारण कई लोगो के चर्चा में शामिल होने के बावजूद चर्चा विषय से भटका नहीं. शिक्षक ने पिछले दो माह से विद्यालय में मध्याह्न भोजन नहीं दिये जाने का कारण बताया और यह भी कहा कि किचेन शेड बन जाने के बाद मध्याह्न भोजन नियमित रूप से बच्चों को मिलने लगेगा, इसमें लगभग एक सप्ताह और लगेगा. एक अन्य सवाल का जवाब देते हुए बच्चों की शिक्षा का स्तर सुधारने हेतु नियमित शिक्षा के अतिरिक्त विद्यालय में विशेष शिक्षा की व्यवस्था के बारे में बताया.

शिक्षक के सभा से जाने के बाद भी चर्चा जारी रही और लोग तय कर रहे थे कि उन्हें और क्या करना चाहिए. चर्चा में बात सामने आयी कि वार्ड सभा को मालूम होना चाहिए कि बच्चों के पढ़ने की मौजूदा स्थिति क्या है, जिसके आधार पर वार्ड सभा विद्यालय से बच्चों की शिक्षा पर बात कर सके. सभा ने यह तय किया कि अगले दिन इसी प्रांगण में बच्चों को बुला कर उनकी शिक्षा के स्तर की जांच करेंगे और प्रत्येक तीन माह के अंतराल पर इस प्रकार की जांच आयोजित करेंगे. जांच के बाद बच्चा वार स्थिति विद्यालय को बतायेंगे. अगर किसी खास बच्चे की शिक्षा की स्थिति में सुधार नहीं होता है, तो विद्यालय से इसका कारण पूछेंगे और बेहतरी के लिए विद्यालय की सहायता करेंगे.

विद्यालय में विद्यालय शिक्षा समिति है यह जानकारी भी शिक्षक के द्वारा दी गयी. शिक्षा समिति के उपस्थित सदस्य के द्वारा बच्चों की शिक्षा की स्थिति के बारे में अनभिज्ञता जतायी गयी. वार्ड सभा में इस बात की भी चर्चा हुई कि शिक्षा समिति की बैठक या अभिभावक बैठक में सामान्य चर्चा के अतिरिक्त हरेक बच्चे की शिक्षा की स्थिति पर चर्चा हो. कमजोर बच्चे के प्रति शिक्षक और अभिभावक के कार्य क्या होंगे, इसे लिख कर इसके पीछे लगे.

वार्ड सभा में चर्चा की शुरुआत इसके सशक्तिकरण पर कार्य कर रहे कार्यकर्ता के फैसिलिटेशन से हुआ. अब मुख्य प्रश्न है कि बिना किसी फैसिलिटेशन के क्या कोई व्यक्ति या समूह अपने बच्चे के लिए सरकारी विद्यालय से अच्छी शिक्षा प्राप्त करने के लिए पहल कर सकता है? क्या वह व्यक्ति या समूह एक कदम आगे आकर ऐसा वातावरण दे सकते हैं कि सरकारी विद्यालय के शिक्षक प्रत्येक बच्चे को अच्छी शिक्षा देना सुनिश्चित कर सकें ? जैसे शिक्षक से तय समय पर नियमित रूप से मिलें और बच्चों की पढ़ाई के बारे में चर्चा करें. वे प्रतिदिन बच्चे की कॉपी देखें. अपने बच्चे की कॉपी पर हस्ताक्षर करें. देखें कि शिक्षक बच्चे की कॉपी पर कार्य को चेक किये हैं या नहीं. शिक्षक से सामान्य बातें नहीं कर (जैसे बचवा पढवे नहीं करता है, बचवा में कोई तरक्की नहीं हुआ है, बच्चा पर आप ध्यान ही नहीं देते हैं इत्यादि) किसी खास दिन के किसी खास बिंदु पर ही शिक्षक से चर्चा करें (जैसे आज आप बच्चा को गृहकार्य नहीं दिये, बच्चा को उक्त पाठ समझ में नहीं आया इत्यादि).

आज लगभग सभी गावों में विद्यालय है और कुछ गावों में विद्यालय वर्षों से चला आ रहा है, शिक्षक हैं, कमरे भी हैं, लेकिन अभिभावक अपनी जिम्मेवारी नहीं ले रहे हैं, जो कि कई बार बहुत ही आसान प्रतीत होता है विशेष तौर पर, जब यह सामूहिक पहल का हिस्सा बनता है. क्या एक प्रयास लंबे काल के लिए सिर्फ अभिभावक, विद्यालय शिक्षा समिति और वार्ड सभा को लेकर लिया जा सकता है, लंबे समय इसलिए कि व्यवहार लंबे समय के बाद ही बदलता है.

(सदस्य, प्रेरणा डेवलपमेंट फाउंडेशन)

छोटी और असंगठित क्षेत्र में पनपी फैक्टरियों के मालिक पलायन करके आये मजदूरों से खास लगाव रखते है, क्योंकि एक तो ऐसे मजदूर कम मेहनताने पर काम करने को तैयार रहते हैं, दूसरे छोटी-मोटी बातों को आधार बना कर इनके काम से गैरहाजिर रहने की भी संभावना कम होती है. ऐसे मजदूर ठेकेदार के कहने में होते हैं और स्थानीय मजदूरों की तुलना में मोलभाव करने की इनकी ताकत भी कम होती है.